Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संस्कृत साहित्य की नवीन काव्य विधाओं के लक्षणकार, लक्षणग्रंथ तथा लक्षण

ओमनदीप शर्मा
संस्कृत विभाग, सर्वकारीय कन्या महाविद्यालय, पटियाला, पंजाब

डा. पुष्पेन्द्र जोशी
संस्कृत एवं पालि विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला, पंजाब

संस्कृत साहित्य की अविरल धारा इक्कीस्वीं शताब्दी में प्रवेश कर चुकी है। संस्कृत भाषा का साहित्य आधुनिक विधाओं के माध्यम से अपने आप में उत्तरोत्तर उत्कृष्टता को प्राप्त कर रहा है। संस्कृत भाषा के आधुनिक कवि इस साहित्य को पुनः चर्मोत्कर्ष पर ले जाने को आतुर से दिखाई देते है। जिसमें इन कवियों के नित्यनये-नये प्रयोग देखते ही बनते है। इन नये प्रयोगों में यहाँ एक और कवियों की रचनात्मकता तथा सरल भाषा पाठकों को आनन्द के समुद्र में गोते लगवा देती है वहीं काव्यशास्त्रीय आचार्यइन विधाओं के शास्त्रीय लक्षण देकर संस्कृत भाषा को बीते जमाने की भाषा कहने वालों को स्तब्ध कर देते हैं। काव्यशास्त्रीय परंपरा को जीवित रखते हुए संस्कृत के अनेक विद्वानों ने अपने अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ लिखे हैं। जिनमें न केवल पारम्परिक प्रश्नों यथा-शब्द शक्तियाँ,अलंकार, रस,दोष आदि का वर्णन प्राप्त होता है अपितु आधुनिक विधाओं यथा- गज़ल,कव्वाली, शेर, हाईकु, शिंजों, ताँका, सॉनेट्, सभेद लघुकथा, कज़री, चैती आदि के भी लक्षण दिए गये हैं, यद्यपि अधिकतर आचार्यों का ध्यान काव्यशास्त्र के पारम्परिक प्रश्नों पर ही रहा है तथापि कुछ ऐसे आचार्य भी हैं जो प्राचीनता के साथ साथ आधुनिकता को जोड़ते हुए आधुनिक विधाओं के लक्षण करते दिखाई देते हैं।इनमें आचार्य राधावल्लभत्रिपाठी, प्रो. अभिराजराजेन्द्रमिश्र,आचार्य रहसविहारी द्विवेदी आदि प्रमुख नाम हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में हम उपरोक्त आचार्यों, उनके काव्यशास्त्रीय ग्रंथों तथा आधुनिक विधाओं के विषय में दिए उनके लक्षणों पर विचार करेगें।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

1. प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र-

प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र संस्कृत के प्रतिष्ठित विद्वानों में से एक हैं। इनका जन्म दो जनवरी 1943 में द्रोणीपुर, जिला जौनपुर उत्तरप्रदेश मे हुआ था। इसके पिता का नाम पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र तथा माता का नाम श्री मती अभिराजी देवी था। इन्होनें अपनी बी. ए., एम. ए. तथा डी. फिल. तक का अध्ययन इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ही किया। अपने शोध समाप्ति काल के समय में ही ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में सहायक आचार्य पद पर नियुक्त हुए, पुनः बाली द्वीप के उदयन विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर पद पर आसीन हुए। भारत लौटने पर शिमला विश्वविद्यालय में आचार्य तथा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में अपनी सेवाएँ दी। आचार्य हिन्दी,संस्कृत, अंग्रेजी,भोजपुरी तथा जावी भाषा में साहित्य रचना की साधना में लीन रहते हैं। वर्तमान काल तक इनके 200 से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित चुके हैं।

1.2 लक्षणग्रंथ-

आधुनिक काव्य विधाओं के लक्षण ग्रंथ के रूप में आचार्य अभिराज राजेन्द्र मिश्र कृत 'अभिराजयशोभूषणम्''अत्यन्त प्रसिद्ध है। यह ग्रंथ परिचयोन्मेष, वस्तुतत्वोन्मेष, आत्मतत्वोन्मेष ,निर्मिततत्वोन्मेष, प्रकीर्णतत्वोन्मेष नामक पाञ्च उन्मेशों में निबद्ध है। ग्रंथ में कारिका,वृत्ति,उदाहरण तथा पद्यों के द्वारा विषय को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। इस ग्रंथ में 567 कारिकाएँ हैं। इसका उल्लेख प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी ने अपने ग्रंथ संस्कृत काव्य शास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास में भी किया है।

आधुनिक संस्कृत साहित्य की नवीन काव्य विधाओं के लक्षण करते हुए आचार्य ने रागकाव्य, कज़री, रसिककाव्य, गज़ल, फाल्गुनी आदि काव्यों के लक्षणोंको प्रतिपादित किया है।

1.2.1 रागकाव्य लक्षण-

लोकोत्तराह्लादमयं प्रसन्नं सङ्गेयतालध्रुवकानुबद्धम्।
रागात्मकं नाट्यकृतेऽपि युक्तं नृत्यत्पदाङ्कं किलरागकाव्यम्।।[1]

अर्थात् -अलौकिकरूप से आह्लादित तथा आनन्दित करने वाला, गेयात्मक, अन्त्यानुप्रास युक्त, कहीं-कहीं नाटकादियों में तथा नृत्यादि के लिए उपयुक्त रागकाव्य होता है।

[1]अभिराजराजेन्द्रमिश्रकृत् अभिराजय़शोभूषणम् चतुर्थोन्मेष पृष्ठ-242-47

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

1.2.2 कज़रीगीत लक्षण-

अपनेग्रन्थ 'अभिराजयशोभूषणम्' में आचर्य ने कज़री का सुन्दर लक्षण प्रस्तुत किया है।

कोशलेषु न काशीषु गीयते हि घनागमे।
गीतिका कजरीनाम्नी नैकरागसमाश्रिता।।
वियोगिन्या हि गीतेऽस्मिन् प्रेषितं नायकं प्रति।
उपालम्भाः प्रदीयन्ते विस्मृतिक्षोभकारकाः।।[2]

कज़री कौशलदेश में गाए जाने वाला प्रसिद्ध रागकाव्य है। अनेकरागों पर आधारित यह गीति श्रावण मास के समय आकाश में बादल आ जाने पर गाए जाने की परम्परा है। वियोगीनियाँ इन गीतों में अपने प्रियों के प्रति रमणीय उल्हानें देती दिखाई देती हैं।

1.2.3 रसिकगीत लक्षण-

आधुनिक संस्कृत काव्यपरम्परां में रसिकगीत लिखने की परम्परा भी देखी गई है। रसिकगीत की विशेषताओं को अभिराजराजेन्द्रमिश्र ने लक्षणबद्ध करके 'अभिराजयशोभूषणम्' में इस प्रकार वर्णित किया है।

रासोत्सवं समालक्ष्य मुकुन्दराधिकाश्रितम्।
रसिकं गीयते प्रीत्या व्रजेषु शारदागमे।।[3]

रसिकगीत जिसे सामान्य भाषा में रसिया भी कहा जाता है। व्रजक्षेत्र में राधा-कृष्ण की रासलीता को लक्षित करके गाये जाने वाले गीत हैं। यह शरद ऋतु के प्रारम्भ में गाए जाते हैं।

1.2.4 फाल्गुनिकगीत लक्षण -

मिश्र जी ने फाल्गुनीक गीत जिसे लोकभाषा में फ़ाग कहा जाता है, को सोदाहरण अपने काव्यशास्त्रीयग्रन्थ में वर्णित किया है कि-

गीयते फाल्गुने मासे फाल्गुनिकं गृहे-गृहे।
चतुस्तालादिभिर्भेदैर्होलिकोत्सवसङ्गतम्।।
होलिगीतमपि प्रोक्तं ततो हर्षोर्धसम्भृतम्।
कुङ्कुमैः पटवासैश्च वर्धितानन्दमङ्गलम्।।

[2]वहींप्रकीर्णतत्त्वोन्मेष 23-24
[3]वहींप्रकीर्णतत्त्वोन्मेष 25

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

असह्यशीतकम्पेभ्यो मुक्तो लोकोऽभिनन्दति।

फाल्गुनं हि वसन्तर्तुमण्डितं शीतहारकम्।।[4]

यह फाल्गुन मास में गाया जाने वाला प्रसिद्ध गीत है। इसे चौताल आदि के भेद से लगभग प्रत्येक घर में गाया जाता है। कुम्कुम, अबीर,गुलालादि के विभिन्न रंगों के द्वारा आनन्दित करने वाले इस गीत को कहीं कहीं होली गीत नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

1.2.5 सूतगृहगीत (सोहर) लक्षण-

पुत्र जन्मादि के अवसर पर सोहर गाने की परम्परा है। उन्हीं गीतों में लक्षण बताते हुए आचार्य कहते हैं कि-

पुत्रजन्मविवाहादिमङ्गलावसरे पुनः।

गीयते ननु नारीभिर्गीतं सूतगृहाभिधम्।।[5]

सोहर गीत पुत्रजन्म, विवाह तथा विभिन्न मंगल अवसरों पर गाया जाता है। इसे पाञ्च अथवा छह गृहणियाँ मिल कर गाती हैं। उत्तरभारत के पञ्जाबादि क्षेत्रों में इसे सेहरा नाम से गाया जाता है । इसकी भाषा पञ्जाबी हो जाती है परन्तु भाव वही रहता है। सम्प्रति इसे संस्कृत में गाए जाने की परम्परा भी प्रारम्भ हुई है।

1.2.6 बटुकगीत (बटुआ) लक्षण-

संस्कृत में बटुक शिष्य अथवा बालक का विशेषण है। बटुआ गीत यज्ञोपवीत संस्कारादि के समय गाए जाने वाली शिक्षा के रूप में गाए जाते हैं।

यज्ञसूत्रोत्सवे रम्यं बटुशिक्षाशयात्मकम्।

बटुकं बटुगीतं वा लोकगीतं महीयते।।[6]

इसी प्रकार इन्होनें अन्य आधुनिक लोकगीतों यथा **प्रचरण[7], नक्तक[8], अथोत्थापन[9], लाङ्गलिक[10], स्कन्धहारीय[11], औष्ट्रहारिक**[12] आदि का सोदाहरण लक्षण दिया है।

[4]वहींप्रकीर्णतत्त्वोन्मेष 26-28
[5]वहींप्रकीर्णतत्त्वोन्मेष 29
[6]वहींप्रकीर्णतत्त्वोन्मेष 30
[7]वहीं प्रकीर्णतत्त्वोन्मेष 32-34
[8]वहीं प्रकीर्णतत्त्वोन्मेष 35-36
[9]वहीं प्रकीर्णतत्त्वोन्मेष 37-38
[10]वहीं प्रकीर्णतत्त्वोन्मेष 39-40

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आचार्य अभिराजरेन्द्र मिश्र ने अनेक गज़ल भेदों का सविस्तार वर्णन किया हैं तथा गज़ल के विभिन्न भागों, विभागों को सोदाहरण स्पष्ट किया है।

1.2.7 गज़ल लक्षण-

गज़ल एक ऐसी विधा है जिसका लक्षण लगभग प्रत्येक आधुनिक काव्यशास्त्री ने करने का प्रयास किया है। उर्दूभाषा के गर्भ से जनित इस विधा ने अनेक संस्कृत कवियों को अपनी ओर आकृष्ट किया है। आधुनिक संस्कृत गीतों में गज़लकाव्य सबसे अधिक लिखा तथा गाया जाने वाला काव्य बन गया है।

संवेदनमयी गीतिर्गजलाख्या न संशयः।
यत्र प्रणयगाम्भीर्यं नैष्ठिकतत्वञ्च वर्णिते।।[13]

'अभिराजयशोभूषणम्' में गज़ल का विस्तृत लक्षण देकर उसके अनेक भेदोपभेदों का वर्णन किया गया है। आचार्य ने विस्तार से विभिन्न संख्या वाली गज़लों को भी सोदाहरण प्रस्तुत किया है।

1.2.8 छन्दोमुक्त काव्य लक्षण-

वर्तमान संस्कृत में छन्दोमुक्त कविता लिखने की परम्परा प्रारम्भ हुई है। उदाहरणस्वरूप आचार्य राधावल्लभत्रिपाठी की मुक्तछन्दकविताएँ देखी जा सकती हैं।अभिराजराजेन्द्रमिश्र स्वयं भी छन्दोमुक्त कविताएँ लिखते हैं। अतः उनका लक्षण करते हुए कहते हैं कि-

गद्यपद्योभयात्मेदं छन्दोमुक्तं हि वाङ्मयम्।
पद्यात्मकलयेनैव यद्धि गद्येन लिख्यते।।[14]

अर्थात् काव्य गद्य और पद्य दोनों प्रकार का होता है। स्वरूप में गद्य जैसा तथा लयात्मक काव्य छन्दोमुक्त कहा जा सकता है।

2. डॉ. राधा वल्लभत्रिपाठी-

डॉ. राधा वल्लभत्रिपाठी भी आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्रियों में प्रमुखतः गिने जाते हैं। इनका जन्म 15 फरवरी 1949 को मध्य प्रदेश के राजगढ़ जनपद में हुआ था। इनके पिता का नाम गोकुल प्रसाद त्रिपाठी तथा माता का नाम शकुंतला देवी था।त्रिपाठी जी डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के आचार्य तथा अध्यक्ष रहे तथा बाद में इन्होनें राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के कुलपति पद को अलंकृत किया।

[11]वहीं प्रकीर्णतत्त्वोन्मेष41-42
[12]वहीं प्रकीर्णतत्त्वोन्मेष43-44
[13]वहींप्रकीर्णतत्त्वोन्मेष 60-67
[14]वहींप्रकीर्णतत्त्वोन्मेष 100

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रो. त्रिपाठी ने हिन्दी तथा संस्कृत में अनेक ग्रंथों की रचना की जिनमें महाकाव्य, नाटक, खण्डकाव्य आदि सम्मिलित हैं। संस्कृत साहित्य 20वीं शताब्दी, संस्कृत काव्यशास्त्र और परंपरा तथा अथर्ववेद का काव्य आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। वर्तमान में भी आचार्य संस्कृत साधना में तत्पर हैं।

2.1 लक्षणग्रंथ-

'अभिनवकाव्यलंकारसूत्रम्'आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र की श्रेष्ठ कृति मानी जाती है। यह सूत्र शैली में निबद्ध है। तीन अधिकरणों में विभक्त इस ग्रंथ में 96 सूत्र हैं। इसके प्रथम तथा द्वितीय अधिकरण में 6-6 अध्याय हैं। तृतीय अधिकरण में कोई अध्यापन न होकर दृष्य श्रृव्य काव्यों की विविध विधाओं पर अर्वाचीन दृष्टि से लक्षण दिए हैं। ग्रंथ में समस्त 12 अध्यायों में वर्णित विषयों कों नूतन मौलिक उद्भावनाओं के साथ लक्षणोदाहरण पूर्वक विवेचित किया गया है। इस ग्रंथ का उल्लेख प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी ने अपने ग्रंथ संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक अध्ययन में भी किया है।

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने अनेक नवीन काव्य विधाओं के लक्षण दिएँ हैं जो इस प्रकार हैं-

2.1.1 लहरीकाव्य लक्षण-

संस्कृत साहित्य में लहरी काव्य लिखने की सुदीर्घ परम्परा है। सहस्रों वर्षों से लहरी काव्य लिखे जा रहे हैं। आदिशङ्कराचार्य के गङ्गालहरी आदि काव्य विश्वविख्यात हैं। लहरी काव्य का लक्षण करते हुए आचार्य कहते हैं कि-

परावरे चेतसि उद्गच्छन्ति च मुहुः संघटन्ति।
भावतरङ्गास्तेषां व्यक्तीकरणं भवेल्लहरी।।[15]

अर्थात् चित्त की गहराई में जो भाव तरंगे उठती हैं उनका व्यक्तीकरण ही लहरी काव्य कहा जाता है।

2.1.2 रागकाव्य लक्षण-

अभिराज राजेन्द्र मिश्र के अनुरूप ही आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने भी रागकाव्य का लक्षण दिया है।

विविधैर्रागैर्येयं ध्रुवकान्वितगीतिसंयुक्तं रागकाव्यम्।[16]

यथा- गीतगोविन्दम् और गीतधीवरम्

[15]डॉ. राधावल्लभत्रिपाठीकृत् अभिनवकाव्यलंकारसूत्रम् पृष्ठ-147 3.1.4
[16]वहीं पृष्ठ 148-सूत्र 3.1.6

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

2.1.3 गीतकाव्यलक्षण-

गीतकाव्यों में ध्रुवक का विशेष महत्त्व होता है। ध्रुवक के विना गीत असम्भव सा जान पड़ता है। आचार्य मिश्र भी गीत में ध्रुवक की महत्तता स्वीकार करते हैं।

तदेवान्त्यानुप्रासध्रुवकान्वितं गीतम्।[17]

अर्थात् अन्त्यानुप्रास अलंकार ही ध्रुवक से अन्वित होने पर गीत कहा जाता है।

2.1.4 मुक्तछंदकाव्य लक्षण-

आचार्य मिश्र ने जिसे छन्दोमुक्त कहा है उसे ही त्रिपाठी जी ने मुक्तछन्द कहा है। इसमें मुक्तकविता को भी गिना जा सकता है। कहा भी है कि-

अन्त्यानुप्रासविहीनं परिमुक्तपैङ्गलं लयान्वितं काव्यं मुक्तछन्दम्।।[18]

2.1.5 गज़लगीति-लक्षण-

गज़ल लगभग पाञ्च शेरों को मिलाकर बनती है। शेरों को राधावल्लभत्रिपाठी ने द्विपदिका कहा है क्योंकि शेर में दो पद ही होते हैं।त्रिपाठी जी इसे गीति का ही एक प्रकार मानते हैं।

द्विपदिकाभिर्निबद्धा गीतिगज़लमुच्यते।।[19]

2.1.6 समस्याकाव्यलक्षण-

समस्याकाव्य अपने आप में प्रसिद्धतथा मनोरञ्जक काव्य होते हैं। इसमें एक अथवा दो पाद को देकर अन्य पदों को पूर्ती करना अपेक्षित होता है। आचार्य बच्चूलालअवस्थी के समस्या काव्य प्रसिद्ध हैं। समस्याकाव्य का लक्षण करते हुए आचार्य कहते हैं कि-

प्रदत्तपदावल्याः पूर्तौ समस्या[20]

2.1.7 संस्मरणलक्षण-

किसी मित्र अथवा स्नेहीजन की मुलाकात का, अथवा दोनों के मध्य घटी किसी घटना का वर्णन ही संस्मरण कहलाता है। इसे कवि सङ्कल्पना के साथ-साथ अतिशयोक्ति से बचते हुए अपने काव्यकौशल का प्रदर्शन भी करता है। कहा भी है कि-

यथावृत्तस्य स्मृत्या आख्यानं संस्मरणम्।।[21]

[17]वहींपृष्ठ 148-सूत्र 3.1.7
[18]वहींपृष्ठ 149-सूत्र 3.1.8
[19]वहींपृष्ठ 150-सूत्र 3.1.9
[20]वहींपृष्ठ 150-सूत्र 3.1.10

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

2.1.8 रेखाचित्रलक्षण-

संस्कृत में रेखाचित्र के सूत्र कालिदासादि विरचित चरित-ग्रन्थों में देखने को मिलते हैं जिसमें नायक-नायिका का नखशिख चित्रण किया जाता रहा है। शब्दों तथा घटनाओं के द्वारा व्यक्ति का पूर्ण खाका रेखाचित्र कहलाता है जिसका लक्षण आचार्य त्रिपाठी जी इस प्रकार करते हैं कि-

शब्दैर्घटनाया व्यक्तेश्चित्रमिव निर्मितं रेखाचित्रम्।।[22]

2.1.9 जीवनचरितलक्षण-

जीवनचरित भी लगभग चरित ग्रन्थों के समान ही होता है परन्तु इसमें व्यक्ति के आवरण से अधिक उसके व्यक्तित्व, तथा उससे प्रभावित घटनाओं की अधिकता अधिक होती है। इसमें अतिशयोक्ति से बचते हुए जीवन की यथार्थ घटनाओं को काव्य दृष्टि से लिखने की परम्परा है।

क**स्यचिन्महापुरुषस्य प्रेरणाप्रदं चरितनिरुपणं जीवनचरितम्।।**[23]

संस्कृतजीवन चरितकाव्यों मे पण्डितलक्ष्मरावकृत् शंकरजीवनाख्यानम् प्रसिद्धहै।

2.1.10 आत्मकथालक्षण-

स्वयं के द्वारा स्वयं की कथा लिखना आत्मकथा कहलाता है। अङ्ग्रेजी में इसे ऑटोवायोग्राफी कहा जाता है।सम्प्रति यह भी संस्कृत में लिखी तथा अनुदित किए जाने के कारण इसका लक्षण भी आचार्य के द्वारा दे दिया गया है।

जीवनचरितस्यैव प्रकार विशेषमात्मकथा।।[24]

2.1.11 यात्रावृत्तलक्षण-

अनेक संस्कृत आचार्यों ने अपने जीवन काल में अनेक यात्राएँ की हैं। उन्हीं यात्राओं का क्रमशः वर्णन यात्रावृत्तान्तों के मुख्य विषय होते हैं। संस्कृत में रेवा प्रसाद द्विवदी आदि के यात्रा वृत्तान्त प्रसिद्ध हैं।

यात्राया यथानुभूतं वर्णनं यात्रावृत्तम्।।[25]

3. **आचार्य रहसविहारी द्विवेदी**-

[21]वहींपृष्ठ 152-सूत्र 3.1.14
[22]वहींपृष्ठ 152-सूत्र 3.1.15
[23]वहींपृष्ठ 152-सूत्र 3.1.16
[24]वहींपृष्ठ 153-सूत्र 3.1.17
[25]वहींपृष्ठ 153-सूत्र 3.1.18

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आचार्य रहसविहारी द्विवेदी जी उत्तरप्रदेश के रहने वाले हैं तथा आधुनिक काव्यशास्त्रीय आचार्यों में प्रमुख हैं। इनका जन्म सन् 1947 में समहन नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम राम अभिलाष द्विवेदी था। इनकी शिक्षा दीक्षा प्रयाग जाबालीपुर में मध्यप्रदेश में सम्पन्न हुई। आचार्य के शताधिक शोधपत्र तथा कविताएँ विभिन्न संस्कृत पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। इनके प्रमुख ग्रंथों में अर्वाचीन सस्कृत साहित्य अनुशीलनम् संस्कृत साहित्य विमर्शः, संस्कृत महाकाव्यों का आलोचनात्मक अध्ययन आदि प्रमुख हैं।

3.1 लक्षणग्रंथ-

आचार्य रहसविहारी का यह **नव्यकाव्यतत्त्वमिमांसा** नामक ग्रंथ आधुनिक काव्य विधाओं को समझने के लिए अतीव महत्वपूर्ण है। इसमें इन्होंने काव्य प्रयोजन से लेकर काव्य हेतु, काव्यलक्षण, महाकाव्य लक्षण, लहरीकाव्य लक्षण,लघुकथा लक्षण,गीतिकाव्य लक्षण, हाईकु लक्षण तान्का तथा शिंजो के लक्षणों को प्रस्तुत किया है। साथ ही इन्होंने दो प्रमुख रसों प्रक्षोभरस तथा राष्ट्रभक्ति रस का उसके स्थाई भावों सहित प्रतिपादन किया है। इसका एक अंश दुर्वा पत्रिका 2005 के अंक में प्रकाशित हुआ था।

आचार्य रहसविहारी जी ने अनेक नवीन काव्य विधाओं के लक्षणों की विस्तृत रूप से विवेचना की है। इसके साथ-साथ अनेक नवीन काव्य विधाओं को प्रतिपादित भी किया है। इनके द्वारा दिए गये कुछ लक्षण इस प्रकार हैं -

3.1.1 विमानकाव्य लक्षण-

विमान में बैठकर पृथ्वी कैसी लगती है इस प्रकार के अनुभवों का वर्णन इन विमानकाव्यों में किया जाता है। यह नितान्त आधुनिक काव्यविधा है जिसका लक्षण रहस विहारी जी ने इस प्रकार किया है-

विमानस्य गतिस्तस्मिन् स्थितस्यानुभवस्ततः।
धरावलोकनं चारू विमानाख्यतेऽभिवर्ण्यते।।[26]

3.1.2 दूतकाव्यलक्षण-

संस्कृतसाहित्य में दूतकाव्य लिखने की प्राचीन परम्परा है। मेघदूत आदि इसके प्रसिद्ध उदाहरण हैं। आधुनिक काल में नए विषयों को लेकर भी दूत काव्यों की रचना हो रही है। काकदूत आदि काव्य इसके वर्तमान उदाहरण हैं अतः आचार्य ने इसका लक्षण किया है-

[26]दूर्वा-द्वितीयोन्मेष (अप्रेल-मई-जून-2005) पृष्ठ-93

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

दूतं कृत्वा निसर्गाङ्गं नरं व पक्षिणं पशुम्।
स्वप्रियं प्रति सन्देशः प्रेष्यते दूतसञ्ज्ञके।।
अवाचोऽव्यक्तवाचोऽपि वर्ण्यतां दूतरूपिणः।
न प्रयान्तु न सन्देशं प्रियार्थं श्रावयन्तु ते।।
मेघदूते भवेन्नाम दूतो मेघो न किन्तु सः।
निःशब्दो यक्षिणीं वक्ति कालिदासस्य वर्णने।।
विप्रलम्भात्मकान्येव प्रायेणैतानि चासते।
भुवो रागश्च राष्ट्रस्य भक्तिर्विन्यस्यतेऽधुना।।[27]

3.1.3 लहरीकाव्य लक्षण-

लहरी काव्य अत्यन्त प्राचीन होते हुए भी नवीनता के द्योतक हैं। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी के अनेक लहरी काव्य प्रसिद्ध हैं। अन्य कवियों के द्वारा भी संस्कृत में लहरी काव्य लिखने की परम्परा ने गति पकड़ी है अतः आचार्य इसका लक्षण भी अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ में प्रस्तुत करते हैं-

देवे देशे निसर्गे वा प्रिये वस्तुनि भक्तिमान्।
कविर्यत्कुरुते काव्यं लहरीत्यभिधीयते।।
स्वतोऽपि पूर्णपद्यानि चैकस्मिन् विषयेऽन्वितिम्।
दधते तानि काव्येऽस्मिन् कल्लोला इव वारिधौ।।[28]

3.1.4 प्रतीकविधानलक्षण-

संस्कृत में कुत्रचित् प्रतीककाव्यलिखने की लघुपरम्परा भी चल पड़ी है जिसमें किसी प्रतीक को आधार बनाकर उसके माध्यम से व्यङ्ग्यप्रधान अथवा अन्यविध रमणीय काव्य लिखे जाते हैं। इस काव्य विधा का लक्षण भी आचार्य इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं-

सम्बन्धात्साहचर्याद्वाऽऽपाततो या समानता।
प्रतीयते वा प्रत्येति भिन्नोयोर्हि पदार्थयोः।।
व्यनक्त्यप्रस्तुतं यत्र पदार्थः प्रस्तुतो यदा।
प्रस्तुतोऽयं च संङ्केतः प्रतीकः काव्यगो भवेत्।।[29]

[27]वहीं पृष्ठ-94
[28]वहीं पृष्ठ-94

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

3.1.5 समस्यापूर्तीकाव्यलक्षण-

समस्यापूर्ती काव्य का लक्षण पूर्व में राधावल्लभ त्रिपाठी भी प्रस्तुत कर चुके हैं। उन्हीं के समान ही लक्षण आचार्य रहसविहारी ने प्रस्तुत किया है।

एकं शब्दं च वाक्यं वा पादं पद्यान्तिमं कविः।
पूर्वप्राप्तं समायोज्य समस्यापूर्तिमङ्कते।।[30]

3.1.6 गीतकाव्यलक्षण-

अभिराज राजेन्द्र मिश्र कहते हैं कि गीतकाव्य को एक लक्षण में बाँधना सम्भव नहीं हैं। गीत के भाव, शरीर, विषय नित्य नवीन होते रहते हैं तथापि गीत के कुछ तत्त्वों कों लेकर उसके लक्षण का प्रयास आधुनिक काव्यशास्त्रियों ने किया है यथा रहसविहारी द्विवेदी जी का प्रस्तुत गीतकाव्य लक्षण-

रागलक्षणसंयुक्तं गेयं गीतं ध्रुवान्वितम्।
एकस्मिन् विषये रागे गीतानां तु समुच्चयः।।
किन्तु गीतं भवेन्मुक्तं स्वयं पूर्णं स्वकथ्यतः।
प्रायशः कविगोष्ठीषु गीतमेव प्रशस्यते।।[31]

3.1.7 हाईकुकाव्य लक्षण-

हाइकु एक जापानी काव्य विधा है। जिसका अभिर्भाव संस्कृत में कुछ दशक पूर्व ही हुआ है। इसे संस्कृत लाने का श्रेय गुजरात के प्रसिद्ध संस्कृतज्ञ श्री हर्षदेव माधव को जाता है। उन्होनें अनेक पत्रिकाओं में हाइकु काव्य लिखे। उन्हें देख कर अन्य कवियों ने भी हाइकु में अपनी लेखनी चलाई। परिणामतः संस्कृत में हाइकु लिखने की परम्परा प्रसिद्ध हो गई और आचार्य रहस विहारी जी ने इसका लक्षण इस प्रकार किया-

जापाने हाईकु ख्यातं होडक्किति विधा च या।
रच्यतेऽति गभीराभिस्तिसृभिर्लघुपङ्क्तिभिः।।
आद्या पञ्चाक्षरी ज्ञेया तृतीयाऽपि तथाविधा।
सप्ताक्षरी द्वितीया स्यात् पूर्णा सप्तदशाक्षरी।।

[29]वहीं पृष्ठ-94-95
[30]वहीं पृष्ठ-96
[31]वहीं पृष्ठ-96

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

त्रिदलं विल्वपत्रं च सत्तरीत्यादि नामतः।
संस्कृते सृज्यते काव्यं कविभिर्माधवादिभिः।।
शब्दलाघवसामर्थ्यात्कवेर्भावेऽर्थगौरवम्।
भाषापेक्ष्यं समुत्प्रेक्ष्यं सारवद् विश्वतोमुखम्।।
युगस्थितिसमुद्भावे पुराकल्पनभङ्गिमा।
एकबिम्बविधानेऽपि चित्रं सम्पूर्णमश्नुते।।
छन्दोऽशं यस्य विन्यासे छन्दोऽभावोऽपि कुत्रचित्।
दृश्यते किन्तु वक्रोक्तिर्ध्वनिर्वाऽस्मिन् विराजते।।[32]

3.1.8 तान्काकाव्यलक्षण-

हाइकु के समान तान्का काव्य भी संस्कृत में प्रसिद्ध है। इसे तान्का,टाँका,तानका आदि नामों से भी जाना जाता है। यह भी जापान का ही प्रसिद्ध छन्द है। हाइकु की अपेक्षा संस्कृत में तान्का काव्यों की संख्या न्यून ही दिखाई देती है। आचार्य के द्वारा प्रस्तुत काव्य लक्षण इस प्राकार है-

तान्काकाव्यप्रकोरोऽयं जापानीयैः प्रवर्तितः।
लयानुकारिभिः शब्दैः काव्यमेतद्विरच्यते।।
पञ्चपदात्मकं काव्यं पञ्चसप्ताक्षरैः कृतम्।
आद्ये पञ्च तृतीये च वर्णा अन्येषु सप्त च।
इङ्गितैरत्र भावानामुन्मेषो व्यञ्जनान्वितः।।
प्रायोऽनलंकृतं शिल्पं रहिताडम्बरं च तत्।
लाघवं शब्दविन्यासे चार्थे व्यञ्जनचारुता।
प्रतीकैरुचितै रम्यं कल्पितं चित्रमश्नुते।।[33]

3.1.9 सीजोकाव्यलक्षण-

सीजो एक दक्षिण-कोरियाईछन्द है जिसे संस्कृत में कुछ वर्ष पूर्व ही लिखा जाने लगा है। उड़ीसा के कवि हरे कृष्ण मेहर के सीजो काव्य प्राप्त होते हैं। संस्कृत अत्यन्त नवीन होने पर भी इनका अपना महत्त्व है। अतः आचार्य ने अपने काव्यशास्त्र में इसका भी लक्षण किया है।

[32]वहीं पृष्ठ-96
[33]वहीं पृष्ठ-96

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

राष्ट्रभक्तिजनाक्रोशसौन्दर्योद्भवनामयम्।
दक्षिणकोरियादेशात्सीजोकाव्यं प्रवर्तितम्।।
वाक्यैस्त्रिभिचतुर्भिवा तिसृभिश्चाथ पङ्क्तिभिः।
शरवेदमितैवर्णैः काव्यमेतद्विरच्यते।।
आरम्भे वस्तुनिर्देशो मध्ये कथ्य प्रकाशनम्।
समाप्तौ चात्र वैदग्ध्यभङ्गीभणितिचारुता।।[34]

3.1.10 लिपिरूपक लक्षण-

वर्णों को इस प्रकार से संयोजित करना की वह किसी पदार्थविशेष की आकृति बन जाए लिपिरूपक कहलाता है। यह सार्थक आकृति काव्य सछन्द अथवा छन्दोमुक्त दोनों प्रकार की हो सकती है। संस्कृत में इस प्रकार के प्रयोग हर्षदेवमाधव के देखे जा सकते हैं। आचार्य ने लिपि रूपक का लक्षण कुछ इस प्रकार किया है।

वर्णे पदक्रमे क्वापि संहितायां पदोच्चये।
अनासत्तिप्रयोगेऽपि हृदयाह्लादको यदा।।
रमणीयार्थो भवेन्नूनं तदा स्याल्लिपिरूपकम्।
श्राव्यं स्यान्नाम तद्भावो भावकैर्लिपिदर्शनात्।।
बुध्यते तेन तत्काव्यं लिपिरूपकमुच्यताम्।
माधवहर्षदेवेन प्रणीतेषु यथायथम्।।
पिरामिडस्वरूपाद्वा सर्पकाष्ठासनादितः।
वर्णानां संहितारूपं विभक्तीकृत्य युज्यते।।
पूर्वस्य चित्रकाव्यस्य भोदोऽयं नूतनीकृतः।।[35]

3.1.11 लघुवर्णकाव्यलक्षण-

संस्कृत अपनी व्याकरण के द्वारा अपने शब्द तथा अर्थ सामर्थ्य के कारण विश्वविख्यात है। संस्कृत के माघ आदि विद्वान इसके शब्दों तथा वर्णों से अनेक प्रयोग करते आए हैं। उसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए संस्कृत विद्वानों में एक नई रीति ने जन्म लिया है जिसका नाम लघुवर्णकाव्यम् रखा गया है। इसमें

[34]वहीं पृष्ठ-97
[35]वहीं पृष्ठ-97

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 10, Oct- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

काव्यविषय के प्रत्येक भाव को लघु वर्णों के द्वारा वर्णित किया जाता है। यह नितान्त नवीन काव्य प्रकार है अतः आचार्य ने इसका भी लक्षण कर दिया है-

विरहो दीर्घवर्णानां सर्वथा यत्र दृष्यते।
लघुवर्णैः कृतं काव्यं लघुवर्णात्मकं भवेत्।।
लघुवर्णप्रयोगेषु वाच्यवैदग्ध्यभङ्गिमा।
भावकानां हृदाह्लादे समर्थो जातु सत्कृतौ।।
लघुर्ण प्रयोगेऽपि काव्यबन्धा मनोहराः।
शब्दसामर्थ्यधीमद्भिः कृता राजन्ति साम्प्रतम्।।[36]

संस्कृत में काव्य के लक्षण करने की एक दीर्घ परम्परा है जो अभी भी जीवित है। काव्य लक्षण करने के भाषा तथा साहित्य को अनेक लाभ होते हैं। काव्य का लक्षण करने से नवीन पाठकों तथा कवियों तक काव्य करने के सूत्र तो जाता ही है साथ-साथ काव्य की परिधि में रहकर नवीन सङ्कल्पनाओं का ज्ञान हो जाता है। उपरोक्त काव्य शास्त्रीय आचार्यों के लक्षणों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि संस्कृत क्षेत्र में अनेक नए प्रयोग हो रहे हैं। उन प्रयोगों को काव्यशास्त्र की दृष्टि से आचार्यों द्वारा प्रमाणित भी किया जा रहा है, यद्यपि उपरोक्त आचार्यों ने संस्कृत साहित्य में व्याप्त लगभग सभी नवीन प्रयोगों के लक्षण दे दिए हैं तथापि रागणी,टप्पा आदि अनेक छोटी-छोटी ऐसी विधाएँ हैं जो अभी काव्यशास्त्रियों की दृष्टि में नहीं आई हैं जिन्हें भविष्य में काव्यशास्त्री अवश्य अपनी तीक्षण बुद्धि से न्यायोचित लक्षण प्रदान करेंगे।

[36]वहीं पृष्ठ-98